केवल अनुपस्थित परीक्षार्थीओं के लिए : केवल 'बारकोड' अंकित यही एकमात्र पृष्ठ नीचे दी गई रेखा से काटकर पत्रक - A तथा पत्रक - B के साथ वापस भेजना है ।

**इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक १ मार्च, २०१५ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें ।**

# बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

## सत्संग शिक्षण परीक्षा

## पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवेश : प्रश्नपत्र - २

जनवरी, २०१५ | समय : दौपहर २.०० से ४.१५ | कुल गुणांक : ७५

| मोडरेशन कार्यालय के लिए | प्रश्न नंबर ( गुण ) | प्राप्तांक |
|---|---|---|
| | १ (९) | |
| | २ (६) | |
| | ३ (५) | |
| | ४ (५) | |
| | ५ (५) | |
| | ६ (८) | |
| विभाग-१, कुल गुण ( ३८ ) | | |

स्वामिनारायण BAPS

**अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।**

☞ **परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुक़सान मत कीजिए ।**

| मोडरेशन कार्यालय के लिए | प्रश्न नंबर ( गुण ) | प्राप्तांक |
|---|---|---|
| | ७ (९) | |
| | ८ (६) | |
| | ९ (५) | |
| | १० (५) | |
| | ११ (६) | |
| | १२ (६) | |
| विभाग-२, कुल गुण ( ३७ ) | | |

☞ **अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है** ☜

**बिना वर्ग निरिक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

| | दिनांक | महिना | वर्ष |
|---|---|---|---|
| परीक्षार्थी का जन्म दिन | ☐☐ | ☐☐ | ☐☐☐☐ |

परीक्षार्थी का अभ्यास .....

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरिक्षक हस्ताक्षर करें ।

**वर्ग निरिक्षक के हस्ताक्षर** .....

☞ **पीछे दी गई सूचनाओं का अवश्य पालन करें ।**

**परीक्षक के हस्ताक्षर** .....

**परीक्षक की नोंध :-**

**મોડરેશન વિભાગ માટે જ**

**ગુણ આંકડામાં** ☐☐

**શબ્દોમાં** .....

ચેકરનું નામ

## ☞ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ☜

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।

२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) में परीक्षा देनी होंगी । **इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नही होगी ।**

३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । **अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और एसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । **वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से **लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । **एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

७. **परीक्षा खंड के बाहर** अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

८. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्युट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।**

९. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदावाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नप्रत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । **किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

११. **मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

१२. **परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान** किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

१३. **प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।**

- परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । **पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता हैं ।** प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
- जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, **तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्याकंन नहीं किया जाएगा ।** जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
- प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद **दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा ।** एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । **ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।**
- प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, **उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रुप में दिए जाएगें** और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
- **नोंध :** जिस परीक्षार्थी ने **भारत की प्रवीण परीक्षा** उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।

१४. **अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!**

**विभाग - १ : किशोर सत्संग प्रवेश - प्रथम संस्करण, जून - १९९७**

**प्र. १ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए ।** **[ ९ ]**

१. ''यह गाँव के ज़मीनदार-ठाकुर जिसको मान की जरूरत है ।''

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

.....

२. ''अभी तम्बाकू बिकी नहीं है, कुछ उगाही भी बाकी है ।''

३. ''मैं आपके तेज़स से उत्पन्न हुई हूँ, इसलिए मैं तपस्विनी हूँ ।''

**प्र. २ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । ( दो से तीन पंक्ति में )** **[ ६ ]**

१. समुद्रदेव ने चारों भाईयों को एक साथ अंचलिभर रत्न दिये ।

.....

.....

.....

.....

२. लाधीबाई ने सब हरिभक्तों को महाराज के बारे में दृढ़ निश्चय करवाया ।

३. सत्यकाम के चेहरे पर ब्रह्मतेज झलकने लगा ।

**प्र. ३** 'नेनपुर के देवजी भगत' - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । ( वर्णनात्मक )** **[ ५ ]**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

**प्र. ४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक ( संपूर्ण ) वाक्य में उत्तर लिखिए ।** **[ ५ ]**

१. रथयात्रा में ठाकुरजी को कैसा धनुष-बाण धारण करवाया जाता है ?

.....

.....

२. दाजीभाई के पैरों में बेड़ियाँ ड़ालकर कमरे में क्यों बन्द कर दिया ?

३. स्नेहभयाँ नयणे कीर्तन कीसने लिखा है ?

४. अहमदाबाद मन्दिर की मूर्तिप्रतिष्ठा किसने और कब की थी ? (संवत्, मास, तिथि)

५. राणा के साथ धाम में कौन गया ?

**प्र. ५** 'करोड रुपये खर्च करने पर....' - **'स्वामी की बात' पूर्ण कीजिए और इसके बारे में निरूपण लिखिए । [ ५ ]**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

**प्र. ६ निम्नलिखित कीर्तन / अष्टक / श्लोक आदि को सूचनानुसार पूर्ण कीजिए ।** **[ ८ ]**

१. त्रिगुणातीत फिरत .....

..... प्रगट मुरारी ।

२. नहीं डरते नहीं ..... गान के लिए ॥

३. एकान्तिकं ..... नमामि ॥

४. न ह्यम्मयानि ..... साधवः ॥ - इस श्लोक का हिन्दी में अनुवाद लिखिए ।

**विभाग - २ : शास्त्रीजी महाराज - द्वितीय संस्करण, जून - २०१४**

**प्र. ७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए ।** **[ ९ ]**

१. ''पापियों ! अब तो हमें सोने दो ।''

कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

.....

२. ''जैसी श्रीजीमहाराज की मर्जी ।''

३. ''हम लोग आपकी सेवा में हैं ।''

**प्र. ८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । ( दो से तीन पंक्ति में )** **[ ६ ]**

१. स्वामीश्री को किसी भी तरह वड़ताल छोड़ देना चाहिए ।

.....

.....

.....

.....

२. द्वेषीयों द्वारा किए जा रहे झूठे प्रचार का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा ।

३. सारंगपुर मन्दिर निर्माण में जुड़े सभी सन्त एवं हरिभक्तों दुगुने वेग से सेवा कार्य करने लगे ।

**प्र. ९ निम्नलिखित किन्हीं एक प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । ( वर्णनात्मक )** **[ ५ ]**

१. अजातशत्रु ।

२. गुणातीत के देहोत्सर्ग स्थान पर मन्दिर ।

३. प्रागजी भक्त की संगत ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

**प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक ( संपूर्ण ) वाक्य में उत्तर लिखिए ।** **[ ५ ]**

१. सुवर्ण जयंति पर भगतजी महाराज ने आगाही किए हुए कौन से वचन सत्य सिद्ध हुए ?

.....

.....

२. ''मन्दिर बनाने के लिये ही तो मेरा जन्म हुआ है ।'' ऐसा शास्त्रीजी महाराज ने किसको कहा ?

३. स्वामीश्री ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में किसको पसंद किया ?

४. शास्त्रीजी महाराज की ८०वीं जयंति कहाँ मनाई गई ?

५. लीमड़ी के ठाकुरसाहब ने स्वामीश्री को कौन सी चमत्कारीक वस्तु की बात कही ?

**प्र.११ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही ( ✓ ) का निशान करें ।** **[ ६ ]**

**सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।**

१. डुंगर भक्त को दीक्षा ।

(१) ☐ भगवत्प्रसादजी महाराज ने डुंगर भक्त को दीक्षा दी । (२) ☐ बड़े यज्ञ का आयोजन किया ।

(३) ☐ दीक्षा देकर यज्ञपुरुषदास नाम दिया । (४) ☐ सं. १९३९ कार्तिक शुक्ल पंचमी के दिन दीक्षा दी ।

२. विद्यारम्भ ।

(१) ☐ डुंगर भक्त ने यह निश्चय कर रखा था कि पढ़ाई ही करनी है, तो कक्षा में अव्वल ही रहना चाहिये ।

(२) ☐ मेहलाव के मावजीभाई सोचते की : यदि मेरा ऐसा पुत्र हो तो मेरी संपत्ति की शोभा बढ़ जाती ।

(३) ☐ नौ साल की आयु में ही मंदिर में जब कोई साधु उपस्थित नहीं होता तो वे कथा सुनाते थे ।

(४) ☐ मेहलाव में तांबे का बड़ा पनचोरा बजाकर रामायण की कथा की ।

३. चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को शास्त्रीजी महाराज विरुद्ध दोपहर सभा ।

(१) ☐ सारंगपुर से पिटारा भर के रुपये लेकर वढवाण मन्दिर भेजने का जीभाई कोठारी का आक्षेप ।

(२) ☐ ऐसे सदाचारी, साधुता से पूर्ण सन्त के पीछे क्यों पड़े हो ? कालिदासभाई का मुँहतोड़ उत्तर ।

(३) ☐ उनकी पवित्रता पर मुझे कोई शंका नहीं ।

(४) ☐ यह कुछ साधुओं की और गोरधनभाई कोठारी की साज़िश है ।

**प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए ।** **[ ६ ]**

**सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे, अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।**

**उदाहरण : दिल की सफाई का साधन :** कोठारी ने राजकोट कथा करने की आज्ञा की, इसमें तीन उदेश्य थे - पुरानों की पढ़ाई जारी रहे तथा गोंडल निकट में होने से गोपालानंद स्वामी के कृपापात्र शिष्य अदाश्री के साथ स्वामीश्री का सम्पर्क बना रहे ।

**उत्तर :** **दिल की सफाई का साधन : भगतजी** ने राजकोट **पढ़ने** की आज्ञा की, इसमें **दो** उदेश्य थे - **संस्कृत** की पढ़ाई जारी रहे तथा **जूनागढ़** निकट में होने से अक्षरब्रह्म **गुणातीतानंद स्वामी** के कृपापात्र शिष्य **जागा भक्त** के साथ भी स्वामीश्री का सम्पर्क बना रहे ।

१. **स्वामीश्री की महत्ता :** निर्गुण स्वामी जब मुंबई में थे, उसी समय से दोलतरामभाई की उनसे अंतरंग जानपहचान थी । निर्गुण स्वामी के प्रति उनके हृदय में अतयधिक सम्मान था । ये हिन्दी और संस्कृत साहित्य के प्रखर विद्वान थे ।

२. **अड़सठ तीर्थ :** उसी रात को वे आँगन के द्वार खुला करके मंदिर में लगे बिस्तर पर माला फेरने लगे । ठीक एक घण्टे के बाद आँगन के द्वार अपने आप बंद हो गए ।

३. **बोचासण में प्रथम अक्षरपुरुषोत्तम मन्दिर :** इस मंदिर में तो स्वामी की मूर्ति की प्रतिष्ठा करेंगे, अत: सारे ब्रह्माण्ड की लक्ष्मी यहाँ आकृष्ट होकर चली आएगी ।

४. **सारंगपुर की शोभा :** बोचासण के मन्दिर की खबर गढ़डा के कोठारी हिमजीभाई को मिली, तो द्वेष उगलते हुए उन्होंने वड़ताल के कोठारी गिरधरदास को लिख भेजा ।

५. **सच्चे गुरुभक्त :** गढ़डा मे हरिजयंति के अवसर पर प्रागजी भक्त को आमंत्रित करने के लिए स्वामी यज्ञपुरुषदासजी ने विहारीलालजी महाराज से आग्रहपूर्वक निवेदन किया ।

६. **छोटा, पर असरदार :** तुमने तो हद कर दी, हम सबके काम, क्रोध और लोभ आदि विकारों को पिघलाकर सद्भाव में पलट दिया ।

* * *

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

**http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx**